MBD

Super Refresher

हिंदी कोर्स-ए 10

भाग–2

- एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तक के पाठों का सार, मुख्य अंशों की सप्रसंग व्याख्या तथा संबंधित प्रश्नोत्तर
- एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्यपुस्तक के पाठों के प्रश्न (हल सहित)
- पाठ्यक्रम के अनुसार लघु और दीर्घ उत्तर वाले अन्य प्रश्नोत्तर

स्मरण रखने योग्य महत्वपूर्ण तथ्यों व प्रश्नों के लिए चिह्न

मूल्यों पर आधारित प्रश्न (VBQs) (हल सहित)

एन.सी.ई.आर.टी. एवं सी.बी.एस.ई. के पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों पर आधारित

MBD

Super Refresher

हिंदी
(कोर्स-ए)
10

- क्षितिज भाग-2 (पाठ्यपुस्तक)
- कृतिका भाग-2 (पूरक पाठ्यपुस्तक)

भाग-2

लेखक
डॉ० रामकुमार शर्मा
डॉ० वेद प्रकाश जुनेजा

संपादक
- कल्पना शर्मा
- प्रवीन भल्ला

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् NCERT/CBSE के पाठ्यक्रम एवं नवीन पाठ्यपुस्तकों पर आधारित

मल्होत्रा बुक डिपो
(उच्चकोटि की ऐम बी डी पुस्तकों के प्रकाशक)
An ISO 9001:2015 Certified Company

भाग-1 } संयुक्त
भाग-2 } मूल्य: ₹ 400.00

OUR ADDRESSES IN INDIA

- **New Delhi:** MBD House, Gulab Bhawan, 6, Bahadur Shah Zafar Marg — *Ph. 23317931, 23318301*
- **Mumbai:** A-683, T.T.C. Industrial Area, M.I.D.C. Off. Thane-Belapur Road, Navi Mumbai — *Ph. 32996410, 27780821, 8691053365*
- **Chennai:** No. 26 B/2 SIDCO Estate, North Phase, Pataravakkam, Ambattur Industrial Estate, Ambattur — *Ph. 26359376, 26242350*
- **Chennai:** Plot No. 3018, Old Y Block, 3rd Street, 12th Main Road, Anna Nagar West — *Ph. 23741471*
- **Kolkata:** Satyam Building, 46-D, Rafi Ahmed Kidwai Marg — *Ph. 22296863, 22161670*
- **Jalandhar City:** MBD House, Railway Road — *Ph. 2458388, 2459046, 2455663*
- **Bengaluru:** 124/31, 1st Main, Industrial Town (Near Chowdeshwari Kalyan Mantap), West of Chord Road, Rajajinagar — *Ph. 23103329, 23104667*
- **Hyderabad:** 3-4-492, Varun Towers, Barkatpura — *Ph. 27564788, 9985820001*
- **Ernakulam:** Surabhi Building, South Janatha Road, Palarivattom — *Ph. 2338107, 2347371*
- **Pune:** Survey No. 44, Behind Matoshree Garden, Kondhwa–Khadi Machine, Pisoli Road, at Post-Pisoli — *Ph. 65271413, 65275071*
- **Nagpur:** 'Chandrakor', Plot No. G-15, Aath Rasta Chowk, West High Court Road, Laxmi Nagar, — *Ph. 2248104, 2248106, 2248649, 2245648*
- **Ahmedabad:** Godown No. 10, Vedant Prabha Estate, Opp. ONGC Pumping Station, Sarkhej Sanand Road, Sarkhej — *Ph. 26890336, 32986505*
- **Cuttack:** Badambadi, Link Road — *Ph. 2367277, 2367279, 2313013*
- **Guwahati:** Chancellor Commercial, Hem Baruah Road, Paan Bazar — *Ph. 2131476, 8822857385*
- **Lucknow:** 173/15, Dr. B. N. Verma Road, Old 30 Kutchery Road — *Ph. 4010992, 4010993*
- **Patna:** Ist Floor, Annapurna Complex, Naya Tola — *Ph. 2672732, 2686994, 2662472*
- **Bhopal:** Plot No. 137, 138, 139, Sector-I, Special Industrial Area, Govindpura — *Ph. 2581540, 2601535*
- **Jabalpur:** 840, Palash Chamber, Malviya Chowk — *Ph. 2405854*
- **Goa:** H. No. 932, Plot No. 66, Kranti Nagar (Behind Azad Bhawan), Alto Porvorim, Bardez — *Ph. 2413982, 2414394*
- **Jaipur:** C-66A, In front of Malpani Hospital, Road No. 1, V.K. Industrial Area, Sikar Road — *Ph. 4050309, 4020168*
- **Raipur:** Behind Aligarh Safe Steel Industries, Vidhan Sabha Road, Avanti Bai Chowk, Lodhi Para Pandri — *Ph. 2445370, 4052529*
- **Karnal:** Plot No. 203, Sector-3, HSIDC, Near Namaste Chowk, Opp. New World — *Ph. 2220006, 2220009*
- **Shimla (H.P.):** C-89, Sector-I, New Shimla-9 — *Ph. 2670221, 2670816*
- **Jammu (J&K):** Guru Nanak College of Education, Jallo Chak, Bari Brahmana — *Ph. 2467376, 9419104035*
- **Ranchi (Jharkhand):** Shivani Complex, 2nd Floor, Jyoti Sangam Lane, Upper Bazar — *Ph. 9431257111*
- **Sahibabad (U.P.):** B-9 & 10, Site IV, Industrial Area — *Ph. 3100045, 2896939*
- **Dehradun (Uttarakhand):** Plot No. 37, Bhagirathipuram, Niranjanpur, GMS Road — *Ph. 2520360, 2107214*

DELHI LOCAL OFFICES:

- **Delhi (Shakarpur):** MB 161, Street No. 4 — *Ph. 22546557, 22518122*
- **Delhi (Daryaganj):** MBD House, 4587/15, Opp. Times of India — *Ph. 23245676*
- **Delhi (Patparganj):** Plot No. 225, Industrial Area — *Ph. 22149691, 22147073*

MBD BOOKS FOR X (C.B.S.E.)

- MBD Super Refresher English Communicative
- MBD Super Refresher English Language & Literature
- MBD Super Refresher Hindi Course 'A'
- MBD Super Refresher Hindi Course 'B'
- MBD Super Refresher Mathematics
- MBD Super Refresher Social Science
- MBD Super Refresher Science
- MBD Sanskrit
- MBD Super Refresher Punjabi

Contributors

Project Manager: Debasish Subudhi

Composition & Layout: Dhirender Singh Negi and Team

We are committed to serve students with best of our knowledge and resources. We have taken utmost care and attention while editing and printing this book but we would beg to state that Authors and Publishers should not be held responsible for unintentional mistakes that might have crept in. However, errors brought to our notice, shall be gratefully acknowledged and attended to.

© All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise without the prior written permission of the publisher. Any breach will entail legal action and prosecution without further notice.

Published by: **MALHOTRA BOOK DEPOT**
MBD House, Railway Road, Jalandhar City.

Printed at: **HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.**
B-9 & 10, Site IV, Industrial Area, Sahibabad (U.P.)

आमुख

ऐम बी डी Super Refresher वे महत्वपूर्ण सहायक पुस्तकें हैं, जो जटिल विषय को न केवल सरल रूप में प्रस्तुत करती हैं, बल्कि विद्यार्थियों के समक्ष उसकी गहराई को भी परत-दर-परत खोलती हैं। सरल शब्दों में कहा जाए तो Super Refresher वस्तुत: स्कूली पुस्तकों में वर्णित ज्ञान को विस्तृत रूप से प्रस्तुत करती हैं। आधुनिक शिक्षण पद्धति पर आधारित Super Refresher पुस्तकें विद्यार्थियों को एक ऐसा माध्यम प्रदान करती हैं, जिससे वे बार-बार स्वयं को ज्ञान की कसौटी पर परखते हैं। बात चाहे सामान्य की हो या विशिष्ट की—Super Refresher के द्वारा विद्यार्थियों को अपने विषय से संबंधित ज्ञान को बढ़ाने में सहायता मिलती है।

ऐम बी डी Super Refresher **की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–**

- प्रत्येक पाठ एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक पर आधारित है।
- पाठ के स्मरण रखने योग्य महत्वपूर्ण अंश चिह्नित किए गए हैं।
- प्रत्येक पाठ के कवि अथवा लेखक का परिचय दिया गया है।
- पाठ के स्मरण हेतु पाठ का संक्षिप्त सार दिया गया है।
- पाठ को सरलता से समझने हेतु कठिन शब्दों के अर्थ दिए गए हैं।
- पाठ के महत्वपूर्ण गद्यांशों का अर्थ समझने के लिए अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर दिए गए हैं।
- पाठ्यपुस्तक की कविताओं को समझने हेतु सप्रसंग व्याख्या, अर्थग्रहण एवं सौंदर्य-सराहना संबंधी प्रश्नोत्तर दिए गए हैं।
- एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्न उत्तर सहित।
- परीक्षा की तैयारी के लिए पाठ पर आधारित परीक्षोपयोगी अन्य प्रश्नोत्तर एवं अभ्यास के लिए प्रश्न दिए गए हैं।
- पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों के आधार पर अतिरिक्त मूल्यबोध संबंधी प्रश्नोत्तर दिए गए हैं।
- व्याकरण की समझ विकसित करने हेतु व्याकरण के मुख्य नियम सरलता से समझाए गए हैं।
- रचनात्मक क्षमता के विकास हेतु रचना-भाग दिया गया है।

आशा है कि पुस्तकों की यह शृंखला आपके लिए बहु-उपयोगी सिद्ध होगी।

—प्रकाशक

हिंदी पाठ्यक्रम—'ए'

कक्षा-दसवीं

अंक : 80

क्रम सं०	विषयवस्तु
1	**पठन कौशल गद्यांश व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर बहुविकल्पी प्रश्न**
(अ)	दो अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के)
(ब)	दो अपठित काव्यांश (100 से 150 शब्दों के)
2	**व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न**
3	**पाठ्यपुस्तक क्षितिज (भाग-2) व पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका (भाग-2)**
(अ)	**गद्य खंड**
1	क्षितिज से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न।
2	क्षितिज से निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की उच्च चिंतन व मनन क्षमताओं का आकलन करने हेतु प्रश्न।
(ब)	**काव्य खंड**
1	काव्यबोध व काव्य पर स्वयं की सोच की परख करने हेतु क्षितिज से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर प्रश्न।
2	क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न।
(स)	**पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका (भाग-2)**
	पूरक पुस्तिका 'कृतिका' के निर्धारित पाठों पर आधारित एक **मूल्य परक** प्रश्न पूछा जाएगा। इस प्रश्न का कुल भार पाँच अंक होगा। यह प्रश्न विद्यार्थियों के पाठ पर आधारित मूल्यों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को परखने के लिए होगा।
4	**लेखन**
(अ)	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर 200 से 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबंध।
(ब)	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित औपचारिक तथा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र।
(स)	दिए गए गद्यांश का 'सार-लेखन'।

(मूल्यपरक प्रश्न पूरक पाठ्यपुस्तक पर आधारित होगा। इसके लिए 5 अंक निर्धारित हैं।)

क्रम सं०	(व्याकरण)
1.	रचना के आधार पर वाक्य-भेद
2.	वाच्य
3.	पद-परिचय
4.	रस
5.	अपठित गद्यांश
6.	अपठित काव्यांश
7.	पत्र-लेखन
8.	निबंध-लेखन
9.	सार-लेखन

*** Disclaimer :** The Syllabus and Model Questions Papers are subject to change in case there is any change in CBSE guidelines.

ऐम बी डी

Super Refresher

सभी पद्य एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक पर आधारित

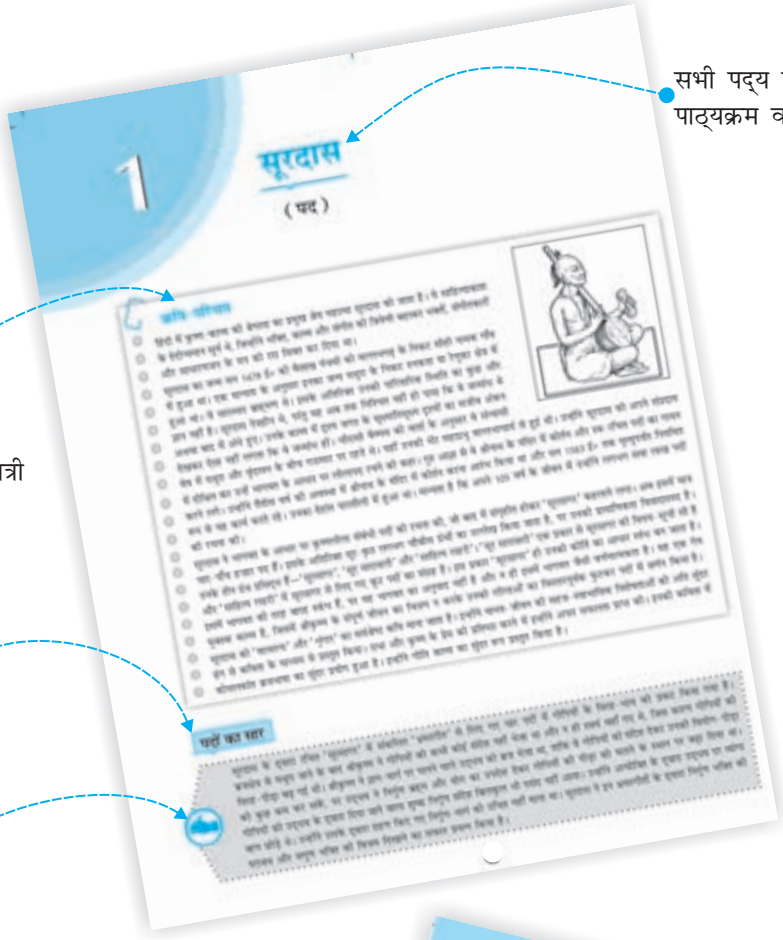

प्रत्येक पद्य के कवि/कवयित्री का परिचय

पद्य का सार

स्मरण रखने योग्य महत्वपूर्ण अंश

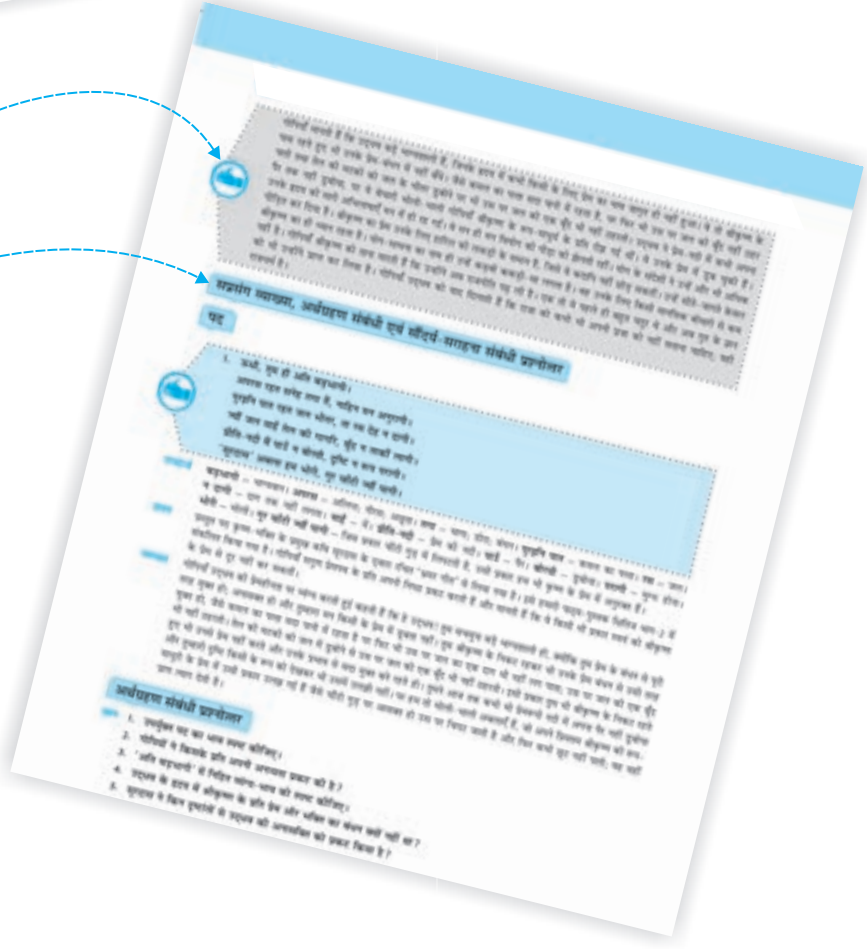

पद्य का स्मरणीय महत्वपूर्ण अंश

पद्य में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ, सप्रसंग व्याख्या, अर्थग्रहण एवं सौंदर्य-सराहना संबंधी प्रश्न व उत्तर

हिंदी

सभी गद्य एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक पर आधारित

प्रत्येक गद्य के लेखक/लेखिका का परिचय

गद्य का संक्षिप्त सार

स्मरण रखने योग्य महत्वपूर्ण अंश

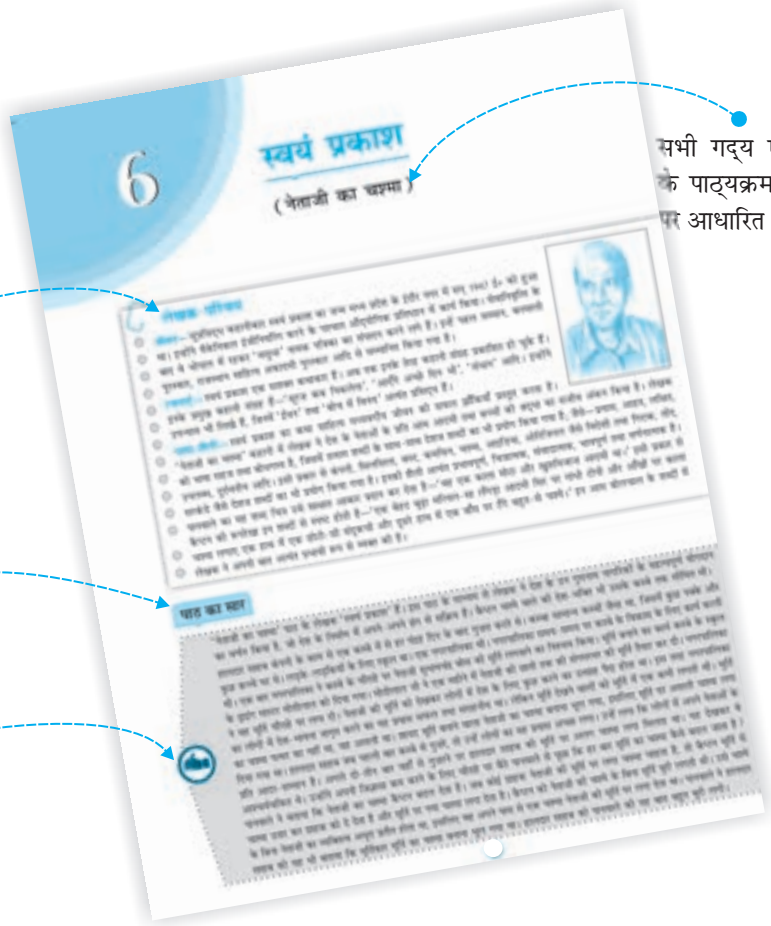
6

स्वयं प्रकाश

(नेताजी का चश्मा)

पाठ का सार

गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न व उत्तर

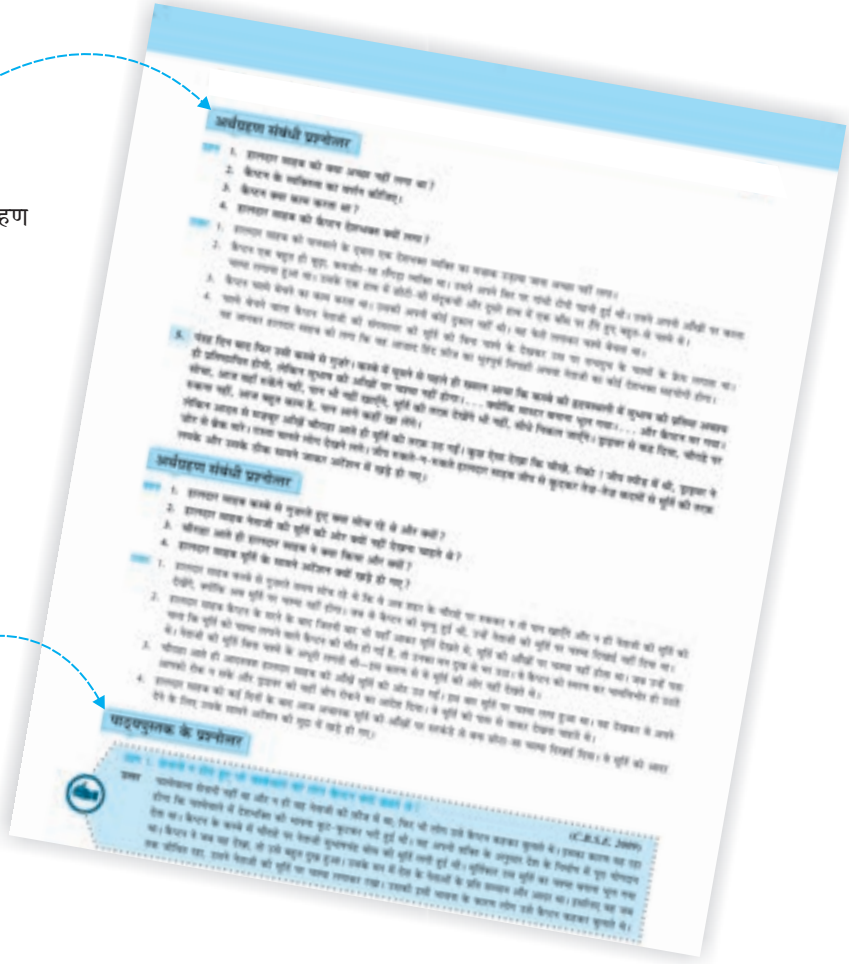
अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तक के पाठ पर आधारित प्रश्न व उत्तर

विषय-सूची

क्षितिज - पाठ्यपुस्तक (भाग-2)

खंड-क पद्य-खंड 1-119

1	सूरदास		3
2	तुलसीदास		19
3	देव		40
4	जयशंकर प्रसाद		52
5	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'		65
6	नागार्जुन		78
7	गिरिजाकुमार माथुर		92
8	ऋतुराज		103
9	मंगलेश डबराल		111

खंड-ख गद्य-खंड 121-210

10	स्वयं प्रकाश	(नेताजी का चश्मा)	122
11	रामवृक्ष बेनीपुरी	(बालगोबिन भगत)	134
12	यशपाल	(लखनवी अंदाज़)	147
13	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	(मानवीय करुणा की दिव्य चमक)	156
14	मन्नू भंडारी	(एक कहानी यह भी)	167
15	महावीरप्रसाद द्विवेदी	(स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन)	179
16	यतींद्र मिश्र	(नौबतखाने में इबादत)	192
17	भदंत आनंद कौसल्यायन	(संस्कृति)	203

कृतिका - पूरक पाठ्यपुस्तक (भाग-2)

खंड-ग 211-251

1	शिवपूजन सहाय	(माता का अँचल)	212
2	कमलेश्वर	(जॉर्ज पंचम की नाक)	219
3	मधु कांकरिया	(साना-साना हाथ जोड़ि...)	227
4	शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र'	(एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!)	237
5	अज्ञेय	(मैं क्यों लिखता हूँ?)	245

- **ऐम बी डी सम्भावित मॉडल प्रश्न-पत्र** 1-11

क्षितिज (भाग-2)

खंड क

पद्य-खंड

- कवि-परिचय
- कविता का सार
- शब्दार्थ
- सप्रसंग व्याख्या, अर्थग्रहण संबंधी एवं सौंदर्य-सराहना संबंधी प्रश्नोत्तर
- पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर
- परीक्षोपयोगी अन्य प्रश्नोत्तर
- अभ्यास के लिए प्रश्न

हृदय सिंधु मति सीप समाना।
स्वाति सारदा कहहिं सुजाना।
जो बरषइ बर बारि विचारू।
होहिं कवित मुक्तामनि चारू।

— तुलसीदास

1857 जंग-ए-आज़ादी के शहीदों को सलाम

सन 1857 के बागी सैनिकों का कौमी गीत

हम हैं इसके मालिक हिंदुस्तान हमारा
पाक वतन है कौम का जन्नत से भी प्यारा
ये है हमारी मिल्कियत हिंदुस्तान हमारा
इसकी रूहानियत से रोशन है जग सारा
कितनी कदीम कितना नईम, सब दुनिया से न्यारा
करती है जरखेज़ जिसे गंगो–जमुन की धारा
ऊपर बर्फ़ीला पर्वत पहरेदार हमारा
नीचे साहिल पर बजता, सागर का नक्कारा
इसकी खानें उगल रहीं सोना हीरा पारा
इसकी शान–शौकत का दुनिया में जयकारा
आया फिरंगी दूर से ऐसा मंतर मारा
लूटा दोनों हाथ से प्यारा वतन हमारा
आज शहीदों ने है तुमको अहले वतन ललकारा
तोड़ो गुलामी की ज़ंजीरें बरसाओ अंगारा
हिंदू मुसलमां सिख हमारा भाई भाई प्यारा
यह है आज़ादी का झंडा इसे सलाम हमारा॥

1 सूरदास

(पद)

कवि-परिचय

हिंदी में कृष्ण-काव्य की श्रेष्ठता का प्रमुख श्रेय महात्मा सूरदास को जाता है। वे साहित्याकाश के देदीप्यमान सूर्य थे, जिन्होंने भक्ति, काव्य और संगीत की त्रिवेणी बहाकर भक्तों, संगीतकारों और साधारणजन के मन को रस सिक्त कर दिया था।

सूरदास का जन्म सन 1478 ई० की वैशाख पंचमी को वल्लभगढ़ के निकट सीही नामक गाँव में हुआ था। एक मान्यता के अनुसार इनका जन्म मथुरा के निकट रुनकता या रेणुका क्षेत्र में हुआ था। वे सारस्वत ब्राह्मण थे। इसके अतिरिक्त उनकी पारिवारिक स्थिति का कुछ और ज्ञान नहीं है। सूरदास नेत्रहीन थे, परंतु यह अब तक निश्चित नहीं हो पाया कि वे जन्मांध थे अथवा बाद में अंधे हुए। उनके काव्य में दृश्य जगत के सूक्ष्मातिसूक्ष्म दृश्यों का सजीव अंकन देखकर ऐसा नहीं लगता कि वे जन्मांध हों। चौरासी वैष्णव की वार्ता के अनुसार वे संन्यासी वेष में मथुरा और वृंदावन के बीच गऊघाट पर रहते थे। यहीं उनकी भेंट महाप्रभु वल्लभाचार्य से हुई थी। उन्होंने सूरदास को अपने संप्रदाय में दीक्षित कर उन्हें भागवत के आधार पर लीलापद रचने को कहा। गुरु आज्ञा से वे श्रीनाथ के मंदिर में कीर्तन और स्व-रचित पदों का गायन करने लगे। उन्होंने तैंतीस वर्ष की अवस्था में श्रीनाथ के मंदिर में कीर्तन करना आरंभ किया था और सन 1583 ई० तक मृत्युपर्यंत नियमित रूप से यह कार्य करते रहे। उनका देहांत पारसौली में हुआ था। मान्यता है कि अपने 105 वर्ष के जीवन में उन्होंने लगभग सवा लाख पदों की रचना की।

सूरदास ने भागवत के आधार पर कृष्णलीला संबंधी पदों की रचना की, जो बाद में संगृहीत होकर 'सूरसागर' कहलाने लगा। अब इसमें मात्र चार-पाँच हज़ार पद हैं। इसके अतिरिक्त सूर-कृत लगभग चौबीस ग्रंथों का उल्लेख किया जाता है, पर उनकी प्रामाणिकता विवादास्पद है। उनके तीन ग्रंथ प्रसिद्ध हैं—'सूरसागर', 'सूर सारावली' और 'साहित्य लहरी'। 'सूर सारावली' एक प्रकार से सूरसागर की विषय-सूची सी है और 'साहित्य लहरी' में सूरसागर से लिए गए कूट पदों का संग्रह है। इस प्रकार 'सूरसागर' ही उनकी कीर्ति का आधार स्तंभ बन जाता है। इसमें भागवत की तरह बारह स्कंध हैं, पर यह भागवत का अनुवाद नहीं है और न ही इसमें भागवत जैसी वर्णनात्मकता है। यह एक गेय मुक्तक काव्य है, जिसमें श्रीकृष्ण के संपूर्ण जीवन का चित्रण न करके उनकी लीलाओं का विस्तारपूर्वक फुटकर पदों में वर्णन किया है।

सूरदास को 'वात्सल्य' और 'शृंगार' का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है। इन्होंने मानव-जीवन की सहज-स्वाभाविक विशेषताओं को अति सुंदर ढंग से कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया। राधा और कृष्ण के प्रेम की प्रतिष्ठा करने में इन्होंने अपार सफलता प्राप्त की। इनकी कविता में कोमलकांत ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग हुआ है। इन्होंने गीति काव्य का सुंदर रूप प्रस्तुत किया है।

पदों का सार

सूरदास के द्वारा रचित 'सूरसागर' में संकलित 'भ्रमरगीत' से लिए गए चार पदों में गोपियों के विरह-भाव को प्रकट किया गया है। ब्रजक्षेत्र से मथुरा जाने के बाद श्रीकृष्ण ने गोपियों को कभी कोई संदेश नहीं भेजा था और न ही स्वयं वहाँ गए थे, जिस कारण गोपियों की विरह-पीड़ा बढ़ गई थी। श्रीकृष्ण ने ज्ञान-मार्ग पर चलने वाले उद्धव को ब्रज भेजा था, ताकि वे गोपियों को संदेश देकर उनकी वियोग-पीड़ा को कुछ कम कर सकें, पर उद्धव ने निर्गुण ब्रह्म और योग का उपदेश देकर गोपियों की पीड़ा को घटाने के स्थान पर बढ़ा दिया था। गोपियों को उद्धव के द्वारा दिया जाने वाला शुष्क निर्गुण संदेश बिलकुल भी पसंद नहीं आया। उन्होंने अन्योक्ति के द्वारा उद्धव पर व्यंग्य बाण छोड़े थे। उन्होंने उसके द्वारा ग्रहण किए गए निर्गुण-मार्ग को उचित नहीं माना था। सूरदास ने इन भ्रमरगीतों के द्वारा निर्गुण भक्ति की पराजय और सगुण भक्ति की विजय दिखाने का सफल प्रयत्न किया है।

गोपियाँ मानती हैं कि उद्धव बड़े भाग्यशाली हैं, जिनके हृदय में कभी किसी के लिए प्रेम का भाव जागृत ही नहीं हुआ। वे तो श्रीकृष्ण के पास रहते हुए भी उनके प्रेम-बंधन में नहीं बँधे। जैसे कमल का पत्ता सदा पानी में रहता है, पर फिर भी उस पर जल की बूँद नहीं ठहर पाती तथा तेल की मटकी को जल के भीतर डुबोने पर भी उस पर जल की एक बूँद भी नहीं ठहरती। उद्धव ने प्रेम-नदी में कभी अपना पैर तक नहीं डुबोया, पर वे बेचारी भोली-भाली गोपियाँ श्रीकृष्ण के रूप-माधुर्य के प्रति रीझ गई थीं। वे उनके प्रेम में डूब चुकी हैं। उनके हृदय की सारी अभिलाषाएँ मन में ही रह गईं। वे मन ही मन वियोग की पीड़ा को झेलती रहीं। योग के संदेशों ने उन्हें और भी अधिक पीड़ित कर दिया है। श्रीकृष्ण का प्रेम उनके लिए हारिल की लकड़ी के समान है, जिसे वे कदापि नहीं छोड़ सकतीं। उन्हें सोते-जागते केवल श्रीकृष्ण का ही ध्यान रहता है। योग-साधना का नाम ही उन्हें कड़वी ककड़ी-सा लगता है। वह उनके लिए किसी मानसिक बीमारी से कम नहीं है। गोपियाँ श्रीकृष्ण को ताना मारती हैं कि उन्होंने अब राजनीति पढ़ ली है। एक तो वे पहले ही बहुत चतुर थे और अब गुरु के ज्ञान को भी उन्होंने प्राप्त कर लिया है। गोपियाँ उद्धव को याद दिलाती हैं कि राजा को कभी भी अपनी प्रजा को नहीं सताना चाहिए; यही राजधर्म है।

सप्रसंग व्याख्या, अर्थग्रहण संबंधी एवं सौंदर्य-सराहना संबंधी प्रश्नोत्तर

पद

1. **ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।**
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।

शब्दार्थ **बड़भागी** – भाग्यवान। **अपरस** – अलिप्त; नीरस; अछूता। **तगा** – धागा; डोरा; बंधन। **पुरइनि पात** – कमल का पत्ता। **रस** – जल। **न दागी** – दाग तक नहीं लगता। **माहँ** – में। **प्रीति-नदी** – प्रेम की नदी। **पाउँ** – पैर। **बोरयौ** – डुबोया। **परागी** – मुग्ध होना। **भोरी** – भोली। **गुर चाँटी ज्यौं पागी** – जिस प्रकार चींटी गुड़ में लिपटती है, उसी प्रकार हम भी कृष्ण के प्रेम में अनुरक्त हैं।

प्रसंग प्रस्तुत पद कृष्ण-भक्ति के प्रमुख कवि सूरदास के द्वारा रचित 'भ्रमर गीत' से लिया गया है। इसे हमारी पाठ्य-पुस्तक क्षितिज भाग-2 में संकलित किया गया है। गोपियाँ सगुण प्रेमपथ के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट करती हैं और मानती हैं कि वे किसी भी प्रकार स्वयं को श्रीकृष्ण के प्रेम से दूर नहीं कर सकतीं।

व्याख्या गोपियाँ उद्धव की प्रेमहीनता पर व्यंग्य करती हुई कहती हैं कि हे उद्धव! तुम सचमुच बड़े भाग्यशाली हो, क्योंकि तुम प्रेम के बंधन से पूरी तरह मुक्त हो; अनासक्त हो और तुम्हारा मन किसी के प्रेम में डूबता नहीं। तुम श्रीकृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रेम बंधन से उसी तरह मुक्त हो, जैसे कमल का पत्ता सदा पानी में रहता है पर फिर भी उस पर जल का एक दाग भी नहीं लग पाता; उस पर जल की एक बूँद भी नहीं ठहरती। तेल की मटकी को जल में डुबोने से उस पर जल की एक बूँद भी नहीं ठहरती। इसी प्रकार तुम भी श्रीकृष्ण के निकट रहते हुए भी उनसे प्रेम नहीं करते और उनके प्रभाव से सदा मुक्त बने रहते हो। तुमने आज तक कभी भी प्रेमरूपी नदी में अपना पैर नहीं डुबोया और तुम्हारी दृष्टि किसी के रूप को देखकर भी उसमें उलझी नहीं। पर हम तो भोली-भाली अबलाएँ हैं, जो अपने प्रियतम श्रीकृष्ण की रूप-माधुरी के प्रेम में उसी प्रकार उलझ गई हैं जैसे चींटी गुड़ पर आसक्त हो उस पर चिपट जाती है और फिर कभी छूट नहीं पाती; वह वहीं प्राण त्याग देती है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

प्रश्न
1. **उपर्युक्त पद का भाव स्पष्ट कीजिए।**
2. **गोपियों ने किसके प्रति अपनी अनन्यता प्रकट की है?**
3. **'अति बड़भागी' में निहित व्यंग्य-भाव को स्पष्ट कीजिए।**
4. **उद्धव के हृदय में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम और भक्ति का बंधन क्यों नहीं था?**
5. **सूरदास ने किन दृष्टांतों से उद्धव की अनासक्ति को प्रकट किया है?**

6. **पद में निहित गेयता का आधार स्पष्ट कीजिए।**
7. **'गुर चींटी ज्यौं पागी' के माध्यम से श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम को प्रतिपादित कीजिए।**
8. **अंतिम पंक्तियों में गोपियों ने स्वयं को 'अबला' और 'भोरी' क्यों कहा है?**
9. **उद्धव के मन में अनुराग नहीं है, फिर भी गोपियाँ उन्हें बड़भागी क्यों कहती हैं?**
10. **उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?**
11. **इस पद में परोक्ष रूप से उद्धव को क्या समझाया गया है?**
12. **उद्धव को बड़भागी किस लिए कहा गया है?**
13. **गोपियों ने ऊधो को क्या कहा है?**
14. **'पुरइनि पात' के माध्यम से कवि ने क्या कहा है?**

उत्तर 1. गोपियाँ उद्धव की प्रेमहीनता का मज़ाक उड़ाती हुए कहती हैं कि उसके हृदय में प्रेम की भावना का अभाव है। वह पूर्ण रूप से प्रेम के बंधन से मुक्त और अनासक्त है। उसने कभी प्रेम की नदी में अपना पैर नहीं डुबोया और उसकी आँखें श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य को देखकर भी उनमें नहीं उलझीं। लेकिन हम गोपियाँ तो भोली-भाली थीं और श्रीकृष्ण की रूप-माधुरी पर आसक्त हो गईं। अब हम किसी भी अवस्था में उस प्रेम-भाव से दूर नहीं हो सकतीं।

2. गोपियों ने श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम-भाव को प्रकट किया है। उनकी अनन्यता श्रीकृष्ण की रूप-माधुरी के प्रति है।

3. गोपियों के द्वारा प्रयुक्त 'अति बड़भागी' शब्द व्यंग्य के भाव को अपने भीतर छिपाए हुए है। मज़ाक में गोपियाँ उद्धव को बड़ा भाग्यशाली मानती हैं, क्योंकि वह श्रीकृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रति प्रेम-भाव में नहीं बँधा।

4. उद्धव निर्गुण ब्रह्म के प्रति विश्वास रखता था। उसका ब्रह्म रूप आकार से परे था, इसलिए वह स्वयं को श्रीकृष्ण के साकार रूप के प्रति नहीं बाँध पाया। उसके हृदय में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम और भक्ति का बंधन भाव नहीं था।

5. सूरदास ने उद्धव को अनासक्त और श्रीकृष्ण के प्रति भक्तिभाव से सर्वथा मुक्त माना है। सूरदास कहते हैं कि जिस प्रकार कमल का पत्ता सदा जल में रहता है, पर फिर भी उस पर जल की एक बूँद तक नहीं ठहर पाती; उसी प्रकार उद्धव श्रीकृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रति भक्ति भावों से रहित था। तेल की किसी मटकी को जल के भीतर डुबोने पर उस पर जल की एक बूँद भी नहीं ठहरती, उसी प्रकार उद्धव के हृदय पर श्रीकृष्ण की भक्ति थोड़ा-सा भी प्रभाव नहीं डाल सकी थी।

6. सूरदास के द्वारा रचित पद 'राग मलार' पर आधारित है। इसमें स्वर-मैत्री का सफल प्रयोग और ब्रज-भाषा की कोमलकांत शब्दावली गेयता के आधार बने हैं।

7. गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम भरा मन चाहकर भी कहीं और नहीं टिकता। वे पूरी तरह से अपने प्रियतम की रूप-माधुरी पर आसक्त थीं; उनके प्रेम में पगी हुई थीं। जिस प्रकार चींटी गुड़ पर आसक्त होकर उससे चिपट जाती है और फिर छूट नहीं पाती; वह वहीं अपने प्राण दे देती है। इसी तरह गोपियाँ भी श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम-भाव में डूबी रहना चाहती हैं और कभी उनसे दूर नहीं होना चाहतीं।

8. गोपियों ने स्वयं को 'भोरी' कहा है। वे छल-कपट और चतुराई से दूर थीं, इसलिए वे अपने प्रियतम की रूप-माधुरी पर शीघ्रता से आसक्त हो गईं। वे स्वयं को श्रीकृष्ण से किसी भी प्रकार से दूर करने में असमर्थ मानती थीं। वे चाहकर भी उन्हें प्राप्त नहीं कर सकतीं, इसलिए उन्होंने स्वयं को अबला कहा है।

9. श्रीकृष्ण के साथ रहकर भी उद्धव के मन में प्रेम-भाव नहीं है। इस कारण उसे विरह-भाव का अनुभव नहीं होता; उसे वियोग की पीड़ा नहीं उठानी पड़ती। इसलिए गोपियों ने उद्धव को बड़भागी कहा है।

10. उद्धव के व्यवहार की तुलना पानी पर तैरते कमल के पत्ते और जल में पड़ी तेल की मटकी से की गई है। दोनों पर जल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसी तरह उद्धव भी सब प्रकार से अनासक्त था।

11. इस पद में उद्धव को समझाया गया है कि वह ज्ञानवान है; नीतिवान है; प्रेम से विरक्त है, इसलिए उसका प्रेम-संदेश गोपियों के लिए निरर्थक है। श्रीकृष्ण के प्रेम में मग्न गोपियों पर उसके उपदेश का कोई असर नहीं होने वाला था।

12. उद्धव को बड़भागी व्यंग्य में कहा गया है, क्योंकि वह श्रीकृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम में नहीं डूब पाया।

13. गोपियों ने उद्धव से कहा है कि वह अभागा है, क्योंकि वह श्रीकृष्ण के साथ रहकर भी उनके प्रेम से दूर रहा, गोपियाँ स्पष्ट कहती हैं कि वे कृष्ण के प्रति प्रेम-भाव से समर्पित हैं। वे किसी भी अवस्था में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम-भाव को नहीं त्याग सकतीं।

14. 'पुरइनि पात' के माध्यम कवि ने उन लोगों पर कटाक्ष किया है, जो संसार में रहकर भी प्रेम-मार्ग पर नहीं चल पाते; जो श्रीकृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रति विरक्त बने रहते हैं।

सौंदर्य-सराहना संबंधी प्रश्नोत्तर

प्रश्न

1. **कवि ने पद में किस भाषा का प्रयोग किया है?**
2. **गोपियों की भाषा में किस भाव की अधिकता है?**
3. **पद में किन अलंकारों का प्रयोग किया गया है?**
4. **गोपियों के प्रेम-भाव में निहित विशिष्टता को स्पष्ट कीजिए।**
5. **यह पद किस काव्य-विधा से संबंधित है?**
6. **इस पद में कौन-सा काव्य गुण प्रधान है?**
7. **'अति बड़भागी' में कौन-सी शब्द-शक्ति निहित है?**
8. **भक्तिकाल के किस भाग से इस पद का संबंध है?**
9. **गोपियों का कथन किस भाव-मुद्रा से संबंधित है?**
10. **पद को संगीतात्मकता किस गुण ने प्रदान की है?**
11. **किन्हीं दो प्रयुक्त तद्भव शब्दों को लिखिए।**

उत्तर

1. ब्रजभाषा।
2. व्यंग्य भाव।
3. अनुप्रास — • सनेह तगा तैं
   • पुरइनि पात रहत
   • ज्यौं जल।
   उपमा — • गुर चाँटी ज्यौं पागी।
   रूपक — • अपरस रहत सनेह तगा तैं
   • प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोरयौ।
   उदाहरण — • ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
   दृष्टांत — • पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
4. सूरदास के इस पद में गोपियों की निश्छल प्रेम-भावना की अभिव्यक्ति हुई है। वे कृष्ण के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं। उनके प्रेम को ठेस लगाने वाला कोई भी विचार उन्हें क्रोधित कर देता है। क्रोध-प्रेरित व्यंग्य उनके प्रेम-भाव की विशिष्टता है।
5. नीति काव्य।
6. माधुर्य गुण।
7. लक्षणा शब्दशक्ति।
8. कृष्ण भक्ति काव्य।
9. वक्रोक्ति।
10. छंद प्रयोग और स्वर मैत्री के प्रयोग।
11. अपरस, स्नेह।

2. मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही॥

शब्दार्थ **माँझ** – में। **अधार** – आधार; सहारा। **आवन** – आगमन; आने की। **बिथा** – व्यथा। **सँदेसनि** – संदेश। **बिरहिनि** – वियोग में जीने वाली। **बिरह दही** – विरह की आग में जल रही। **हुतीं** – थी। **गुहारि** – रक्षा के लिए पुकारना। **जितहिं तैं** – जहाँ से। **उत** – उधर; वहाँ। **धार** – धारा; लहर। **धीर** – धैर्य। **मरजादा** – मर्यादा; प्रतिष्ठा। **लही** – नहीं रही; नहीं रखी।

MBD Super Refresher Hindi-A For Class 10 Volume 2

Publisher : MBD Group Publishers

Author : Ram Kumar Sharma

Type the URL : http://www.kopykitab.com/product/11334

Get this eBook